❋ 3 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे– बाजोली का खेल करो, इस खेल में सारे चक्र का, ब्रह्मा और ब्राह्मणों को राज़ समाया हुआ है।

2] बाप समझाते हैं तुम बच्चों पर अविनाशी बेहद की दशा है। एक होती है हद की दशा और दूसरी होती है बेहद की। बाप है वृक्षपति। वृक्ष से पहले-पहले ब्राह्मण निकलें। बाप कहते हैं मैं वृक्षपति सत-चित-आनन्द स्वरूप हूँ।

3] भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है क्योंकि आइरन एज से गोल्डन एज बना था। यह तो समझाया है कि योग दो प्रकार का है– वह है हठयोग और यह है राजयोग। वह हद का, यह है बेहद का। वह हैं हद के सन्यासी, तुम हो बेहद के सन्यासी। वह घरबार छोड़ते हैं, तुम सारी दुनिया का सन्यास करते हो। अभी तुम प्रजापित ब्रह्मा की सन्तान, यह छोटा-सा नया झाड़ है। तुम जानते हो पुराने से नये बन रहे हैं।

4] तो बाप खुद कहते हैं तुमको सुखी बनाकर मैं फिर वानप्रस्थ में बैठ जाता हूँ। वहाँ मेरी दरकार ही नहीं। भक्ति मार्ग में मेरा पार्ट है फिर मेरा पार्ट आधाकल्प नहीं। ..... सतयुग-त्रेता में भक्ति मार्ग होता ही नहीं। ज्ञान मार्ग भी नहीं कहेंगे। ज्ञान तो मिलता ही है संगम पर, जिससे तुम 21 जन्म प्रालब्ध पाते हो।

5] थोडा भी इस ज्ञान को जानने से ज्ञान का विनाश नहीं होता। स्वर्ग में जरूर आ जायेंगे।

6] यह है सच्ची-सच्ची कथा जिससे तुम देवता बनते हो। भक्ति मार्ग में फिर ढेर कथायें बना दी हैं। एम ऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं है। वह सब हैं गिरन के लिए। उस पाठशाला में विद्या पढ़ाते हैं फिर भी शरीर निर्वाह लिए एम है। पण्डित लोग अपने शरीर निर्वाह लिए बैठ कथा सुनाते हैं। लोग उनके आगे पैसे रखते जाते हैं, प्राप्ति कुछ भी नहीं। तुमको तो अभी ज्ञान रत्न मिलते हैं, जिससे तुम नई दुनिया के मालिक बनते हो। वहाँ हर चीज़ नई मिलेगी। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा। हीरे जवाहर आदि सब नये होंगे।

7] सिक्ख लोग भी कहते हैं जप साहेब तो सुख मिलें अर्थात् मनमनाभव। अक्षर ही दो हैं, बाकी जास्ती माथा मारने की तो दरकार ही नहीं है।

❋ योग-

1] याद से ही विकर्म विनाश होत हैं। तुम पतित से पावन होते हो।

2] बाप को याद करने सब रोग खत्म हो जाते हैं, निरोगी बन जाते हैं।

❋ धारणा-

1] अब बाप कहते हैं और सब बातें तुम छोड़ बाजोली याद करो।

2] बाजोली याद हो तो याह ज्ञान सारा याद रहे। ऐसे बाप को याद कर रात को सो जाना चाहिए।

3] हाँ, जो निश्चयबुद्धि होकर करते हैं उनके फिर विकर्म विनाश होते हैं। फिर नयेसिर शुरू होगा हिसाब-किताब। बाकी मेरे पास नही आते हैं। मेरी याद से विकर्म विनाश होते हैं, न कि जीवघात से। मेरे पास तो काई आते नहीं। कितनी सहज बात है। यह बाजोली तो बुढ़ो को भी याद रहनी चाहिए, बच्चों को भी याद रहनी चाहिए।

4] मास्टर सर्वशक्तिमान माना संकल्प और कर्म समान हो। अगर संकल्प बहुत श्रेष्ठ हो और कर्म संकल्प प्रमाण न हो तो मास्टर सर्वशक्तिमान नहीं कहेंगे। तो चेक करो जो श्रेष्ठ संकल्प करते हैं वो कर्म तक आते हैं या नहीं। मास्टर सर्वशक्तिमान की निशानी है कि जो शक्ति जिस समय आवश्यक हो वो शक्ति कार्य में आये। स्थूल और सूक्ष्म सब शक्तियां इतना कन्ट्रोल में हो जो जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता हो उसे काम में लगा सकें।

❋ सेवा-

1] बाप से सच्ची कथा सुनकर दुसरों को सुनानी है। मायाजी बनने के लिए आपसमान बनाने की सेवा करनी है, बुद्धि में रहे हम कल्प-कल्प के विजयी है, बाप हमारे साथ हैं।